

संभर

कं

फूल

गोती  
१० ए०





## परिचय

- \* जन्मतिथि- १  
अगस्त १९१६
- \* जन्मभूमि- ग्राम  
—चरेजी, पत्रा-  
लय - तेलिया-  
कला, जिला-  
देवरिया, उत्तर  
प्रदेश ।
- \* शिक्षा— एम०  
ए०, बी० टी०,  
माहिल्यरत्न



## श्री मोती वी० ए०

- \* कार्य—१९३६ से ४३ तक अग्रगामी, आज, संसार अउर  
आर्यावर्त के सम्पादकीय विभाग में सहायक ।
- \* १९४४-५२ तक पंचोली आर्टपिक्चर्स लाहौर, प्रकाश  
पिक्चर्स बम्बई अउर फिल्मस्तान लिमिटेड बम्बई में  
गीतकार के पद पर रहलें । 'साजन' के लोकप्रिय गजल  
'हमको तुम्हारा ही आसरा', 'तुम हमारे हो न हो' आ  
'नदिया के पार' के कुल गीतन के अतिरिक्त अनेक  
फिल्म में गीत लिखलें ।
- \* आकाशवाणी बम्बई, प्रयाग, लखनऊ के कलाकार ।
- \* हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी में काव्य-साधना ।
- \* सन् १९४३ में सेण्ट्रल जेल वाराणसी में नजरबन्द भारत-  
रक्षा कानून के अन्तर्गत ।
- \* ए समय सन् १९५० से श्रीकृष्ण इण्टरमीडिएट कालेज  
बरहज ( देवरिया ) में इतिहास, तर्कशास्त्र आ अंग्रेजी के  
प्रवक्ता हवें ।

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह  
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

# सेमर के फूल

(भोजपुरी कविता-संग्रह)



कवि

मोती बी० ए०



प्रकाशक :

भोजपुरी संसद

# सेमर के फूल

- कवि :  
मोती बी० ए०
- संस्करण :  
पहिला, सं० २०२५
- आवरण :  
वैजनाथ वर्मा
- दाम :  
**दाम : साढ़े छ रुपये**
- प्रकाशक :  
भोजपुरी संसद  
जगतगंज, वाराणसी-२
- मुद्रक :  
भोजपुरी प्रस,  
जगतगंज, वाराणसी-२



पूज्य पिता जी  
के  
सादर समर्पित

## अनुक्रम

पृष्ठ	गीत
१	प्रेम के बँसुरिया
३	सेमर के फूल
७	सनन नन सन सन
६	महुवा बारी में
१३	मृग तृष्णा
१५	मृग कस्तूरी
१८	मृगवीन
२१	मृगडाला
२६	अमड़ा के फेड़
२६	खेतवा में हरवा
३१	भँदई दँवात वा
३५	परल पाला तुषार के
३७	सहलो ना जाई
४०	कटिया के सुतार
४४	आव-आव बैला
४७	लामे जाये के परी
४६	निभरि गइलें अमवा
५४	सीमा पर कवि
५७	बोलावत बानी जी
६०	आखिरी कदम
६३	हमरा अधार वा
६५	मुक्तक



## दो शब्द

हिंदी की नवीन काव्यचेतना रसमयता, रमणीयता एवं रागात्मिकता से अपना संबंध विच्छेद कर अतिबौद्धिकता की ओर उन्मुख है। यह बौद्धिकता भी भारतीय जीवन-दर्शन से अनुप्राणित न होकर पश्चिमी जीवन-दर्शन से आक्रांत है। ऐसी स्थिति में भोजपुरी के रससिद्ध कवि श्री मोती बी० ए० के काव्यसंकलन 'सेमर के फूल' की ओर आकर्षित होना प्रत्येक सहृदय के लिये स्वाभाविक है।

सेमर का फूल गंधविहीन होता है किंतु प्रस्तुत 'सेमर के फूल' में मन को मोहनेवाली गंध है। वस्तुतः यह गंध आधुनिक रासायनिक प्रक्रिया की देन नहीं है। यह तो भोजपुरी धरती और जीवन की गंध है जो हमारी सांस्कृतिक परंपरा की थाती है। कवि कहता है—

प्रेम त्याग संयम उदारता जेमें जेतना होला  
फूल गंध फल रस ओ सब वस्तुन में ओतना होला

प्रेम को फूल, त्याग को गंध, संयम को फल तथा उदारता को रस के क्रम में चित्रित कर भावप्रवण कवि ने जहाँ हमारे शाश्वत काव्य की आत्मा का परिचय दिया है वहीं क्रमालंकार का विशिष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। आध्यात्मिक भावना की अभिव्यक्ति में भी कवि की मधुरिमा क्लिष्टता से आच्छादित नहीं है अपितु अपने सहज रूप में पूरे निखार पर लक्षित होती है। 'प्रेम की ब्रँसुरिया' शीर्षक से एक उद्धरण देखें—

जबले प्रेम न उपजी हिय में भोर न तबले होई  
सुकवा भूलत रही अकासे दूबि न मोती पोई  
दिन जो उगबो करी त मुँह पर घिरल अन्हरिया रही  
बहबो करी बेयारि त बरवस बोझ अगिनि के ढोई



हिंदी के मध्यकालीन शृंगारी कवि आम के टिकोरे को अज्ञात-यौवना नायिका के कुच का उपमान सिद्ध करने तक ही सीमित दीख पड़ते हैं किंतु 'सेमर के फूल' का कवि अपनी कल्पना-शक्ति के द्वारा एक ऐसा मनोहारी चित्र उपस्थित करता है जो श्लाघनीय है—

आमे की मोजरि में लागे टिकोरा  
लरिका नियर लरिकोरी के कोरा।

भावुक कवि ने आम्रमंजरी को माँ का रूप दिया है। टिकोरा शिशु है जो माँ के उन्मुक्त कोड़ में विलस रहा है। इसके अतिरिक्त कवि यह भी कहना चाहता है कि जिस प्रकार मंजरी की सार्थकता फलवती होने में है उसी प्रकार नारी की सार्थकता पुत्रवती होने में है। हमारा विश्वास है कि इस प्रकार की मौलिक एवं मर्यादित उद्भावना-शक्ति जिस कवि में होगी वह प्रथितयश कवियों की श्रेणी में अपना स्थान सुरक्षित रखेगा।

इस संकलन की 'महुवा बारी' कविता मानव-जीवन का एक आदर्श रूपक है। इसके अतिरिक्त आज के हमारे समीक्षक जिस यथार्थ की दुहाई देते हैं, इसे भी देखें—

असों आइल महुआ बारी में बहार सजनी  
× × ×  
ई गरीबवन के किसमिस अनार सजनी।

हमारा ग्रामीण जीवन किशमिश और अनार से परिचित नहीं है। औषधि के रूप में भी ये वस्तुएँ उसे उपलब्ध नहीं होतीं क्योंकि वह गरीब है। गरीबी उसके प्राणों को घेरे हुए है। महुवे के सूखे फल को ही वह किशमिश और अनार की भाँति सँजोकर रखता है। आम के निभर जाने पर सहसा उसके मुँह से निकल पड़ता है—

'आहि हो रामा निभर गइलें अमवा'।

इस कारुणिक वेदना के स्वर में स्वर मिला कर सेमर के फूल का कवि जहाँ पूरे ग्रामीण जीवन को मुखरित करता है वहीं इसका भी संकेत देता है कि किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिये इससे बढ़ कर विडंबना और क्या हो सकती है। कवि फैशन के लिये ग्रामीण जीवन का चित्र अंकित करना नहीं चाहता। वह जिस जीवन से जूझ रहा है उसी को मार्मिक स्वर देने में अपने कवि-कर्म की चरितार्थता मानता है। कवि की वाणी में जो शक्ति होती है उसे वह पहचान गया है। अब किसी के अस्तित्व को भाग्य-विधाता के रूप में स्वीकारने का वह पक्षपाती नहीं है। इसी लिये आत्म-निर्भरता का बोध कराने के लिये कहता है—

छोड़ सबके कहल मुनल  
आपन ल सहारा  
तनी अउरी दउर हिरना  
पा जइव किनारा।

आत्मबोध-दर्शन की झलक के लिये कवि की निम्नांकित उचित देखें—

सँपवा के मणी मिलल हथिया के मोती  
तोहके कस्तुरी मिलल दियना के जोती  
अपने में आपन रतनवा हेराना  
चारों ओरिया खोजि अइल पवल ना ठेकाना।

पूर्ण में पूर्ण का रूपांतरण तथा सृष्टिक्रम का रहस्य 'अरुई और गोभी के पात' द्वारा जिस लाक्षणिकता से व्यंजित हुआ है, वह उल्लेखनीय है—

अरुई के पात पियरात बा  
देखीं सभे,  
गोभी के पात चिकनात बा।

कवि की निम्नलिखित पंक्तियों में गाँव की आत्मा का रस छन कर आ गया है—

नउमी के पूड़ी आ फगुवा के पूआ  
बड़ा नीक लागे कराही के धूँआ ।

‘मुक्तक’ के अंतर्गत कवि का नया भावबोध बड़ी सफाई से उभरकर आया है। मोती जी को उन कवियों से चिढ़ है जो बादल से प्रिया का पता पूछते हैं —

पानी बिना जरेला किसानी  
बदरा से मांगी हम पानी  
देखीं तनी कवि जी के,  
केतना गदाइल बाड़ें  
बदरा से पूछ ताड़ें—  
काहाँ दिलवर - जानी ?

भोजपुरी भाषा सहज मिठास तथा ओज से समन्वित है। मोती जी ने अपनी इस कृति में बड़ी कुशलता से इसका निर्वाह किया है। इनकी अधिकांश कविताओं में जहाँ भोजपुरी की माधुरी छलकती है वहीं ‘सीमा पर कवि’ और ‘आखिरी कदम’ नामक कविताओं में ओज का ज्वार लहराता है। सेमर के फूल के लिये मोती जी को बधाई। भगवान् विश्वनाथ इन्हें यशस्वी बनाएँ।

अनंत चतुर्दशो

सं० २०२५

रामबली पांडेय



## प्रेम के बँसुरिया...

कवने दिनवाँ ना  
कवने दिनवाँ बाजी रामजी, प्रेम के बँसुरिया कि  
कवने दिनवाँ ना,  
सूरज उगिहें मोरे अँगनवाँ कि  
कवने दिनवाँ ना !

कवले रही अन्हरिया भोरले, कवले सपना रोई  
कवले सूतलि रही कमलिनी, भोर न ताले होई  
सुकवा बड़ी देर के ऊगल, दूबि सीति मुँह-धोई  
ज्ञानी जागल हवें मगर ई दुनिया कवले सोई

कवने घरीं बोली रामजी, साँसि के सुगनवा कि  
कवने घरीं ना  
खोलिहें आँखि मोर परनवा कि  
कवने घरीं ना !  
कवने दिनवाँ ना...

जेतना काम राति में भइल, का ई केहू जाने  
कंछीं कंछीं कोंढ़ी लागल, होई फूल बिहाने  
पी के सीति कोंच गदराइल का नियरे, का लामें  
चिरई जब ठाकुर जो बोली सभा लगी खरिहाने

जवने साइति डोली भिनुसारे के पवनवाँ कि  
ओही साइति ना  
होई राति के गवनवाँ कि  
ओही साइति ना !  
कवने दिनवाँ ना...

कहिया सूरज ना ऊगेलें, राति न कहिया होले  
 कब ना कोढ़ी फूले कब भिनुसार पवन ना डोले  
 कब ना मीठा बोल सुना के पंछी हिया टटोले  
 किरिन भोर के कब ना आके करम दुअरिया खोले

जवने दिनवाँ बरिसे लागी नेह के नयनवाँ कि  
 ओही दिनवाँ ना,  
 नाची आँखि के सपनवाँ कि  
 ओही दिनवाँ ना  
 कवने दिनवाँ ना...

जबले प्रेम न उपजो हिय में भोर न तबले होई  
 सुकवा भूलत रही अकासे दूबि न मोतो पोई  
 दिन जो उगवों करो त मुंह पर घिरल अन्हरिया रही  
 बहबो करो बेयारि त बरबस बोझ अगिन के ढोई

जबले नाहीं मेटी रामजी, जेठ के तपनिया कि  
 तबले नाहीं ना,  
 दउरल छोड़िहें मोर हिरनवाँ कि  
 तबले नाहीं ना !  
 कवने दिनवाँ ना...

भाव के सुगना मारल जाई, बुद्धि के हाथी जूझो  
 प्रेम के घोखा दीहल जाई साँच भूठ ना सूझो  
 अदिमी से जब अदिमी चिहुकी, अटपट बानी बोली  
 आठों पहर मदाइल रही, नीति अनोति न बूझो

जबले ना फुलाई रामजी, सरधा के सुमनवा कि  
 तबले नाहीं ना,  
 होइहें साँई से मिलनवाँ कि  
 तबले नाहीं ना  
 कवने दिनवाँ ना...

## सेमर के फूल....

सुगना, सेमर की फूलें का एतना लपटाइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
जेकर डाढ़ि पाति बेढंग  
कवनो रूप न कवनो रंग  
ओकरी भुमका पर तूँ का एतना बउराइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
सुगना, सेमर की फूलें...

सब फेड़न से फरकें रहे ई केतना भरल गुमान बा  
सब घरती के भुकि भुकि चूमे ई छूवत असमान बा  
जेकर एइसन ओछ विचार  
अलगा-बिलगी के बेहवार  
ओकरी बातिन में तूँ का एतना भरमाइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
सुगना, सेमर की फूलें...

डाढ़ीं डाढ़ीं फुनगीं फुनगीं मोजरि मँहके आम के  
जरीं से पुलुई कोंचवा भूले रस बरिसे बेदाम के  
जेकर एइसन सवख सिंगार  
ओइपर नेवछावर संसार  
ओके छोड़ि छाड़ि के इहवा कहा बिलाइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
सुगना, सेमर की फूलें...



चटक लाल चटकार देखि के भूलत भुलनी फूलके  
 उड़ल जात रहल तू कहवाँ, इहवाँ अइल भूलिके  
 सुधि बुधि आपन सजी बिसारि  
 आके दिहल डेरा डारि  
 कवने असरा में तू एकरी ऊपर बिकाइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

सेमर की जरी के ओखरि बने, मूसर बने बबूल के  
 हिंसा में ई दूनू सहायक, दूनू एके खून के  
 कहियो लागी एइसन लासा  
 सुगना बनि जइब तमासा  
 इहो भुलनी हँसी ठठाके जेइपर लुभाइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

आम की घोखा में जनि रहि ह, ई सेमर के फेड़ ह  
 ऊपर से बा चीकन-चाकन, भीतर से ई टेढ़ ह  
 जेहि दिन लागी एइमें फर  
 ओहि दिन मनवा जाई भरि  
 लोगवा पूछी, सुगना चोंचे में का लगवले बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलवले बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

मूल कटेत ओखरि बने, फूल काम ना आवे  
 पफर लागे चिरई पछताये, रूई कसल जाये  
 जेकर भाई-पड़िदार  
 बबुर हँउवनि कोटेदार  
 ओकरी चटक-मटक पर का सँचहूँ ललचाइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलवले बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

भुमका भुलनी नकबेसरि ई पहिरि पहिरि भुमकावेला  
 चमकि चमकि मुँह मोरि मोरि, पतइन के ताल बजावेला  
 मरद होके एइसन चाल  
 ओकरी पीछे तू पयमाल  
 तोहके देखत बानी तूहँ कुछु मधुआइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

निबिया फूले, गम-गम गमके, मोजरि मस्त बनावे  
 महुआ चुवे मदन रस बरिसे, कटहर सुधि बिसरावे  
 ई त ह सेमर के जाति  
 केतना बा अवकाति, विसाति  
 जवना के कदम्ब के छाँह समुभि अग्राइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

प्रेम, त्याग, संयम, उदारता, जेमें जेतना होला  
 फूल, गन्ध, फल, रस ओ सब वस्तुन में ओतना होला  
 जेइसन सेमर के व्यक्तित्व  
 ओइसन बा ओकर अस्तित्व  
 कइसे मँहकी ओकर फूल, तू का कठुआइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

जे समाज में मिलि जुलि रहे ऊ समाज के जाने ला  
 ज्ञानी, पण्डित, कलाकार ऊ एकर मरम बखाने ला  
 जब ई रहता जाई छूटि  
 गूहल माला जाई टूटि  
 पण्डित होके काँहे सेमर की डाढ़ी टँगाइल बाड़  
 सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
 सुगना, सेमर की फूलें...

ई संसार यथार्थवाद की कठिन भूमि पर बसल बा  
सेमर के रूई आ लासा छेद छेद में कसल बा  
रहे के बाटे सबकी बीच  
केहू केतनो होई नीच  
सुगना, तू सतसंगो होके कहाँ हेराइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
सुगना, सेमर की फूलें...

जेकर डाढ़ि पात बेदंग  
कवनो रूप न कवनो रंग  
ओकरो भुमका पर तू का एतना बउराइल बाड़  
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो !  
सुगना, सेमर की फूलें...





सनन नन सन सन...

सनन नन सन सन बहेले पुरुवइया

चन्दा ओढ़ावे राति चानी के चदरा  
सूरज उड़ावेलें सोने के बदरा  
बदरे में चकती लगावे मोरी नइया  
सनन नन सन सन...

वरुण जी की कुइयाँ से भरि भरि गगरिया  
चलली भूमकि के गगन के गुजरिया  
अव्वे ओरियानी त अव्वे ओसारी  
नाँचें मुड़ेरीं, अगनवा, दुअरियाँ  
लागल ठोपारी चुवावे पतइया  
सनन नन सन सन...

अस मन करुवे गगन छूइ अइतीं  
बदरे पर चढ़ि के सरग घूमि अइतीं  
दूबी पर लोटि लोटि कविता बनइतीं  
बाँसे की फोंफी में बँसुरी बजइतीं  
लगवें बछरुवा पियावेले गइया  
सनन नन सन सन...

डारि गरे बेला चमेली के गजरा  
सांभे के बइठल भइल भिनुसहरा  
कह राति-रानो केकर देलू पहरा  
पुरुवा के लहरा उड़ावेला अंचरा  
देँहो में उबटन लगावे जोन्हइया  
सनन नन सन सन...

मजे मजे घाम होखे, रसे रसे पानी  
 ताले तलइया में बिटुरल वा चानी  
 सोने के मछरी कि रूपे के रानी  
 पियरी पहिरि बेंग बइठेलें ज्ञानी  
 इनरासन भूठ करे हमरो मइइया  
 सनन नन सन सन...

केहू जाना हर लेके पलिहर में गइलें  
 सुरती ठोकाते मगन केहू भइलें  
 केहू जाने काने में अंगुरी लगवलें  
 गोकुल के बैदा के विरहा सुनवलें  
 दूधा के दाँत भलकावे मकइया  
 सनन नन सन सन...

लहर लहर धान करे फहर फहर सारी  
 भदई के खेतवा भइल फुलवारी  
 धनि रे गुजरिया के खुरपो पियारी  
 धनि रे सँवरिया के फरहा कुदारी  
 चल चलीं बैलन के लेलीं बलइया  
 सनन नन सन सन...

बाउर जे ताकी त आँखि फूटि जाई  
 दुसमन की छाती के हाड़ टूटि जाई  
 देर नाहीं लागी निसान मेटि जाई  
 आफति के सगरी समान जुटि जाई  
 होखे कुछू भाखल त ठान लइइया  
 सनन नन सन सन...

चन्दा ओढ़ावे राति चानी के चदरा  
 सूरज उड़ावलें सोने के बदरा  
 बदरे में चकती लगावे मोरी नइया  
 सनन नन सन सन...

\*

## महुवा बारी में...

असों आइल महुवाबारी में  
बहार, सजनी !  
कोंचवा मातल भुँइया छूवे  
महुवा रसे रसे चूवे  
जबसे बहे भिनुसारे के  
बेयारि, सजनी !  
असों आइल ...

पहिले हरकाँ पछुआ बहलि भारि गिरवलसि पतवा  
गहना बीखो छोरि के मुड़वलसि सगरे मथवा  
महुवा कुछू नाहीं कहलें  
जेइसन परल ओइसन सहलें  
तबले भारे लागलि पुरुवा  
दुआरि, सजनी !  
असों आइल महुवा...

एइसन नसा भोंकलसि कि गदाये लागलि पुलुई  
पोरें पोरें मधू से भराये लागलि कुरुई  
महुवा एइसन ले रेंगरइलें  
जरीं पुलुई ले कोंचइलें  
लागल डाढ़ीं डाढ़ीं डोलिया  
कंहार, सजनी !  
असों आइल...

गड़ी लागल रब्बी के लदाइल खरिहनवाँ  
 दँवरी खातिर ढहले बाड़ें डंठवा किसनवाँ  
 रस के मातल महुवा डोले  
 फुलवा खिरिकी से मुँह खोले  
 घरवा छोड़े के हो गइलि बा  
 तइयार, सजनी !  
 असों आइल...

होत मुन्हारे डलिया दउरी लेके गइली सखियां  
 लोढ़े लगली फुलवा जुड़ावे लगलो अँखियां  
 महुवा टप टप फूल चुवावें  
 लइके सेल्हा ले ले धावें  
 अब त लागि गइल दूसरे  
 बजार, सजनी !  
 असों आइल...

कोंचवा के दुधवा से गोदना गोदावेली  
 केहू जानी महुवा के लपसी बनावेली  
 केहू भेजि दिहल देसाउर  
 केहू घरें सरावे चाउर  
 लागल चढ़े उतरे नसा आ  
 खुमार, सजनी !  
 असों आइल...

सइयाँ खातिर बारी धनियाँ महुअरि पकावेली  
 केहू वनिहारे खातिर तावा पर ततावेली  
 महुवा बैल प्रेम से खावें  
 गाड़ी खींचें, जोत बनावें  
 ई गरीबवन के किसमिस  
 अनार, सजनी !  
 असों आइल...

ओखरी में मूड़ो डरलें, मूसर से कुटइलें  
 लाटा बनिके बाहर अइलें हाथें-हाथें भइलें  
 केतना कइलें कुरुवानी  
 केतना कहीं ई कहानी  
 बहे अँखियाँ से अँसुवा  
 के धार, सजनी !  
 असों आइल...

अपनी जनमला के बाति जे बिचारी  
 कोइना ओकर नाँव राखी वाप महतारी  
 कोइना सँकेलें बेवाइ  
 पकना खा लइके अघाइ  
 उर्हा जरें जहाँ देखेलें  
 अन्हार, सजनी !  
 असों आइल...

दुनिया खातिर त्यागी भइलें जोगी रूप बनवलें  
 आपन सम्पति दूनू हाथें सबके लुटवलें  
 जेतला होला ओतना देलें  
 बदला कुछू नाहीं लेलें,  
 करी के कलऊ में एइसन  
 उपकार, सजनी !  
 असों आइल...

नरम नरम, हरियर हरियर ओढ़लें चदरिया  
 फेर से महुरा दुलहा भइलें बन्हलें पगरिया  
 जइसे दिहलें ओइसे पवलें  
 कवि जी कविता में ई गवलें  
 ए संसार में ना चलेला  
 उधार, सजनी !  
 असों आइल...

जवने हाथें देब पंचे ओही हाथे पइब  
जवन जीनिसि बोइब तूँ ओही के ओसइब  
केहू काँहे पछताला  
केहू काँहे घबराला  
एइसन जिनिगी में मीली ना  
सुतार, सजनी !  
असों आइल---

कोंचवा मातल, भुइयाँ छूवे  
महुवा रसे रसे चूवे  
जबसे बहे भिनुसारे के  
बेयारि, सजनी !  
असों आइल---



## मृगतृष्णा...

नाचत बाटे घाम रे  
हिरन बा पियासा  
जेठ की दुपहरी में  
रेत के बा आसा  
रेतिया बतावे, दूर—  
नाहीं बाटे धारा  
तनी अउरी दउर हिरना  
पा जइब किनारा

पछुवा लुवाठी लेके  
चारों ओर धावे  
रेतिया के भउरा बनल  
देहिया तपावे,  
भीतर बा पियासि, ऊपर—  
बरिसेला अंगारा  
तनी अउरी दउर हिरना  
पा जइब किनारा

फेड़ नाहीं, रूख नाहीं  
नाहीं कहूँ छाया  
कइसन पियासि विधिना  
काया में लगाया  
रोआ - रोआ फूटे  
मुँह से फेंके ल गजारा  
तनी अउरी दउर हिरना  
पा जइब किनारा

खरह पतवार लेके  
 मँड़ई छवावें  
 दुनिया के लोग  
 दुपहरिया मनावें  
 मारल मारल फीरे—  
 एगो जिउवा बेचारा  
 तनी अउरी दउर हिरना  
 पा जइब किनारा

तोहरो दरद दुनिया  
 तनिको ना बूझे  
 कहेले गंवार तोहके  
 भुठहूँ के जूझे  
 जवने में न बस कवनो  
 ओमें कवन चारा  
 तनी अउरी दउर हिरना  
 पा जइब किनारा

दुनिया में केहू के ना  
 मेहनति बेकार बा  
 जेही घाई, ऊहे पाई  
 एही के बजार बा  
 छोड़ सबके कहल-सूनल  
 आपन ल सहारा  
 तनी अउरी दउर हिरना  
 पा जइब किनारा

•

## मृग कस्तूरी...

गरजे लागल बदरा  
धड़कि उठल जियरा  
नाचे लागल मोरवा  
पिहिकि उठल पपिहरा  
गमके लागल देंहिया  
त हो गइल, मस्ताना  
चारों ओरियाँ खोजि अइल  
पवल ना ठेकाना

अँखियाँ से लोरि बहे  
देहीं से पसेनवाँ  
ऊपरा से जोर करे  
सावन के महिनवाँ  
एने - ओने पूछ ताड़  
लगवें खजाना  
चारों ओरियाँ खोजि अइल  
पवल ना ठेकाना

उड़ि जइहें सुगना  
बनल रही खतोना,  
टूटि जइहें पतई  
त बनी ओसे दोना  
अपनी चिजुइया से  
होइ के बेगाना  
चारों ओरियाँ खोजि अइल  
पवल ना ठेकाना

अपनी चिजुइया के  
 जेही नाहीं पूछी  
 दुनिया में ओकरा के  
 केहू नाहीं पूछी  
 बाड़ तूं भुलात होके  
 एतना सेयाना  
 चारों ओरियाँ खोजि अइल  
 पवल ना ठेकाना

केहू अनचितला में  
 छोरि ली बिखइया  
 मुँहवाँ बवाये लागी  
 मिली ना बचइया  
 लही ना उपाइ एको  
 चली ना बहाना  
 चारों ओरियाँ खोजि अइल  
 पवल ना ठेकाना

सँपवा के मणी मीलल  
 हथिया के मोती  
 तोहके कस्तूरी मीलल  
 दियना के जोती  
 अपने में आपन  
 रतनवा हेराना  
 चारों ओरियाँ खोजि अइल  
 पवल ना ठेकाना

दउरेल अनेर तू  
 पहुँचला में देर बा,  
 बुझिल बचन ई  
 समुझला के फेर बा,  
 होख तू सचेत पहिले  
 होखिह दिवाना  
 चारों ओरियाँ खोजि अइब  
 पइब ना ठेकाना

रुक रुक ठाड़ा हो जा  
 काहें अगुताल,  
 हेने सुन, लगें श्राव  
 भुठहूँ डेराल

एक दिन परिजइहें  
 तोंहें पछताना  
 जिनिगी अनेर जाई  
 मिली ना ठेकाना



## मृगबीन...

बीना मधुर मधुर धुन बाजे  
हिरना प्राण छोड़ के नाचे,  
कवने फेरें परलें ना !

ना कुछ बूझें, ना कुछ जाँचें  
कवने फेरें परलें ना  
बीना मधुर...

आइल कातिक रइन अँजोरिया  
बरखा बीतल रे साँवरिया,  
अइलें चन्दा मामा अँगना—  
लिहले सोने के कटोरिया,

ब्याधा बइठें घात लगा के  
कवने फेरें परलें ना  
बीना मधुर...

हिरना हिरना के गोहरावें  
ना कुछ पीयें, ना कुछ खावें  
सुर के चोट करेजवा लागल  
एन्ने धावें, ओन्ने धावें !

ताके दूनो कान उठाके  
कवने फेरें परलें ना  
बीना मधुर...

कब्बों थिरकें, कब्बों धावें  
कब्बों हिरनी के घुरियावें  
मन में एइसन टिसुना जागलि  
मुदई, होत समुझि ना पावें !

हिरना रहि गइलें अभुराके  
कवने फेरें परलें ना  
बीना मधुर...



ओने ब्याधा बूड़ल रंग में  
 एने हिरना-हिरनी संग में  
 ओने बीन मधुर धुन धाजे  
 एने लहरि उठे अंग अंग में  
           केहू का करिहें समुझाके  
           एइसन फेरें परलें ना  
           बीना मधुर...

बीना के धुन जब बउराइल  
 हिरना के सब होस भुलाइल,  
 तबले ब्याधा तीर उठवले  
 आखिर अन्त घरी चलि आइल  
           हिरना गिरि गइलें भहराके  
           एइसन फेरें परलें ना  
           बीना मधुर...

लागल बान करेजा छेदलसि  
 ब्याधा मन के साध पुजवलसि  
 हिरनी रोवें, आँसु बहावें  
 काँहें एइसन जाल बिछवलसि,  
           हिरना का पवल अगराके  
           कवने फेरें परल ना  
           बीना मधुर...

धिक धिक विधिना तोरनगरिया  
 मारल गइलें मोर साँवरिया  
 तड़पत हमके छोड़ि अकेले  
 गइलें तोहरे संग बाँसुरिया,  
           हमके चलि दिहलें विसराके  
           कवने फेरें परलें ना  
           बीना मधुर...

केकरीं चरहा सइयाँ गइलें  
 सइयाँ केकर खेत उजरलें,  
 केकरी घाटें पानी पियलें  
 कवने कारन फाँसी परलें,  
 सइयाँ का पवलें अगराके  
 कवने फेरें परलें ना  
 बीना मधुर...

ब्याघा टँगरो, मूँडी बन्हलें  
 हिरना के घिसिरावत चललें,  
 देखलें हिरनी के जब रोवत  
 आपन दूनू अँखिया मुनलें  
 हरिनी का होई पछताके  
 एइसन फेरा लागन ना  
 बीना मधुर...

अपनी मन के टिसुता मार  
 अब्बों से जिनिगी सँवार  
 जवने कारन ई फल पवलीं  
 ओइ पर तूँह कुछु विचार  
 हम ई सिखलीं जान गँवा के  
 एइसन फेरें परलीं ना  
 बीना मधुर...



## मृगछाला...

हिरना, कवन पुन्नि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

चमकत रेत समुभल पानी  
तरसत बीतल रे जिनगानी  
तोहके कहि कहि हम मरि गइलीं  
छोड़ल ना आपन नादानी

एक त वूभलि ना पियसिया  
दूसरे नाँव धरवल ना  
हिरना, कवन पुन्नि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

धइले ढोंड़ी में कस्तूरी  
छोड़ल ना तूँ कवनों दूरी  
तोहके के एतना भरमावल  
एइसन कवन ले मजबूरी

एक त मुँह से फेंचकुरि छोड़ल  
दुसरे नोधु गँववल ना  
हिरना, कवन पुन्नि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

तोहार बड़हन बड़हन अँखिया  
लाजे मुअली सगरी सखियाँ  
कइसन पुरबुज तूँ कमइल  
ताकत रहि गइल कनखियाँ

केहू ना तनिको मोहाइल  
आपन आंखि कढ़वल ना  
हिरना, कवन पुत्रि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

मुनि के गोत जीउ बउराइल  
तोहसे मुदई ना चिन्हाइल  
लेके सँग में लइका फइका  
दउरल गइल तूँ धँधाइल  
मरलसि बान बियाधा हनिके  
जियते खाल खिचवल ना  
हिरना, कवन पुत्रि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

जेतना रहल तूँ डेराइल  
रहल तूँ जेतना पराइल  
हिरना बाति बाति में तोहके  
ओतना देखलीं हम अमुराइल  
गरे लागलि जब फँसरिया  
हुचकत आँसु गिरवल ना  
हिरना, कवन पुत्रि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

केरा की छाँहे तूँ गइल  
ओकरी ऊपर पीठिया धइल  
बुझल ना तूँ धोखा पट्टी  
गछिया गीरल तूँ भहरइल  
तोहरे टँगरी तोहके खइलसि  
उठे नाहीं पवल ना  
हिरना, कवन पुत्रि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

राजा, हाकिम, दइब, भिखारी  
साधू, बनिया अउर सिकारी  
हिरना, कइसन रहल पापी  
तोहार दुसमन सब संसारी

बन - बन चरेल तिरिनिया  
लोहुआ ढार बहवल ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

तोहार दुखवा ना सहाइल  
फाटल छतिया तब सियाइल  
गान्ही, गौतम अउर असोक  
देखले जुलुम जीउ बउराइल

तोहके कोरा में उठवले  
घउवा पर सुहरवले ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

तवनो पर ना राखस छोड़लसि  
चेलवे तोहके सोगहग लिललसि  
गइया, बछवा, मोरवा, हिरना  
जवन चहलसि तवन खइलसि

एइसन दुनिया में मोर हिरना  
तोहके के जनमावल ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

जियते लगे ना जे गइल  
मुअले पर ऊ तोहार भइल  
साधू ले अइले मृगछाला  
उनकी मन में ई बसि गइल

जाके ठाकुर की मन्दिरवा  
तोहार चाम चढ़वलें ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

जेकर जिनिगी गइल अकारथ  
एको पूजल ना सवारथ  
ओकर चाम भइल गुनिआगर  
करे लागल ऊ परमारथ  
हिरना, तोहसे का हम पूछीं  
साधू, तूँ समुभाव ना  
हिरना, कवन पुनि फल कइले  
आपन खाल पुजवले ना

जे ना तनिको अहथिर रहल  
जे जिनिगी में दुखवे सहल  
आड़ें - लुत्ते जे रो लिहले  
कुछू केहू से ना कहल  
ओकरी चामे पर हे जोगी  
कइसे ध्यान लगवल ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना

जोगी, अँखिया तनी उधार  
हमरी मन के संका टार  
बूड़लि जाता सगरी दुनिया  
तनीं एके ना ऊबार  
एने हिरना ओने दुनिया  
नीमन के बतलाव ना  
हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
आपन खाल पुजवल ना



एतना जब चिरउरी कइली  
 खड़ा एके गोड़े भइली  
 बुझलनि साधू ई गोड़ धरिया  
 गँवे - गँवे अँखिया खोलली  
 बोले लगले मोठ बचनियाँ  
 मन के मोह भेटवलें ना  
 हिरना, कवन पुनि तूँ कइल  
 आपन खाल पुजवल ना

जेतना जे सतावल जाला  
 ओतना दुनिया में पुजाला  
 साधू दीन दुखी के खुनवा  
 से घइलिया जब भराला  
 लेला तब केहू अवतार  
 धरम के नाव चलावे ना  
 हिरना, बहुत पुनि जब कइले  
 आपन खाल पुजवलें ना

ई सच्चाई के मृगछाला  
 ई सिधाई के मृगछाला  
 केहू के जे दुख ना दीहल  
 ई सधुवाई के मृग-छाला  
 ई मृग-छाला भवसागर से  
 सबके पार लगावे ना  
 हिरना एही पुनि के कारन  
 आपन खाल पुजावें ना



## अमड़ा के फेड़...

ई त सेमरे की लेखाँ बाटे  
अमड़ो के फेड़ !

ओहीं लेखाँ जरि बाटे ओही लेखाँ पुलुई  
ओही लेखाँ डाढ़ि बाटे ओही लेखाँ पतई  
ओही लेखाँ ठाढ़ बाटे  
होके तनी बेंड़ !  
ई त सेमरे की...

पछुवा सहाय नाहीं, पुरुवा अड़ाय नाहीं  
घाम भइले डाढ़ी तरे माँछियो लुकाय नाहीं  
एकरा से नीमन बाटे  
बाँस अउरी रेंड़ !  
ई त सेमरे की...

बनल चहलें आम बाकी अमड़ा कहइलें  
दुनिया की आँखी में ना धूरि भोंकि पवलें  
मोजरी से नीमन एकरी  
उखिया के गेंड़ !  
ई त सेमरे की...

लठिया चलावे बँसऊ, गावें आ बजावें  
बत्ता बत्ता देहि क के बँगला छवावें  
कुल्ही गँवे नरम नरम  
कहे के करेड़ !  
ई त सेमरे की...

अपना के लेसि घाव सेंकेले पतइया  
कोल्हू में पेराले गुदिया जरे सारी रतिया  
रेंड जब दुनिया में  
भइलें अनेर !  
ई त सेमरे की...

रूप नाहीं, रंग नाहीं, ढंग ना ढेवार बा  
अँवरा से करे के मुकाबिला तयार बा  
कवने घातें करेला  
ई एतना बसेढ़ !  
ई त सेमरे की...

एगो डाढ़ि दिल्ली जाले एगो कलकत्ता  
मूँडी पर डोगि-डोगि मोजरी के छाता  
भुठहूँ के फेड़ ह, ई  
सच हूँ लमेर !  
ई त सेमरे की...

भरि देंहि गेंठा परल गतर-गतर जोड़ बा  
चिगुरल अँगुरी बा पाउक-पाउक गोड़ बा  
करमे के हीन ई ह  
जनमे के टेढ़ !  
ई त सेमरे की ...

ऊपर से उघार बाकी हेठें से तोपाइल  
हर दम लंगोटा बन्द महुवो मदाइल  
नाँचे ई उघारे देंही  
तूरि-तूरि मेंड़ !  
ई त सेमरे की...

अँवरा की धोखा में जो अमड़ा चबइतें  
चँउवन ऋषि कबों ना जवान होइ पइतें  
शंकर जी के भोग लागे  
सबरी के बेर ।  
ई त सेमरे की...

अमड़ा के अचार बने रूई के सिढ़ानो  
 ई हे इन की आदि-औलाद के कहानी  
 कवने गुमान पर ई  
 छूवेला बड़ेर !  
 ई त मेमरे की...

पइसा के हाँड़ी इहवाँ ठोंकि के किनाला  
 चीन्ह के परखि के बेहवार कइल जाला  
 कवले चली धोखा-धड़ी  
 कवले अन्हेर ।  
 ई त सेमरे की...

गुन जब नइखे लगें कइसे केहू मानी  
 कवने विसात पर भइल तूँ गुमानो  
 दरियें बसइव, होइव  
 दरियें तूँ डेर ।  
 ई त सेमरे की...



## खेतवा में हरवा...

खेतवा में हरवा चलइहे रे किसनवा  
होत बाटे धीरे-धीरे भोर  
मटिया में जइसे जइसे चुइहें पसेनवा  
सोना चानी लीहे तें बिटोरि !

जोति-कोड़ खेतवा दे चनन बनाई  
बीया छींटि छींटि देहु सेंवता घुमाई  
धनि रे किसान तोर कठिन कमाई  
तोहरी पीछे जिनिगी उठेले लहराई  
डिभिया उठेले भकभोर !  
खेतवा में हरवा...

नदिया के धार पर लिखि दे कहानी  
आई रे पहाड़ कवने काम ई जवानी  
डाढ़ि-डाढ़ि, पात-पात बान्हि दे निसानी  
बढ़ेले फसिलिया, हँसेले जिन्दगानी  
चारों ओरियाँ भइल अँजोर !  
खेतवा में हरवा...

सोनवा के नदिया खेते में बढ़ि आइल  
कटिया भइल बाटे बोझवा गनाइल  
डूँठवा से देख खरिहनवा लदाइल  
कोठिला, डेहरिया, बखरिया भराइल  
चरहा में चरताड़ें ढोर !  
खेतवा में हरवा...

खेतवा में बलमू के चूवेला पसेनवा  
नेहिया से गोरिया के छलके नयनवा  
गगरी उठाइ चलें, डोले ला परनवा  
हम त जियबि राजा तोहरे करनवा  
जिनिगी जोगाईं पिया, तोर !  
खेतवा में हरवा...

पियरी रंगाले कहूँ टिकुली किनाले  
बेटी की बियाहे के लगनिया सोचाले  
एक-एक चीजु ए बजारी में बिकाले  
मनवा के बतिया मने में रहि जाले  
एइसनि बाटे जिनगी कठोर !  
खेतवा में हरवा...





भँदई दँवात बा...

एक ओर भँदई दँवात बा  
देखीं सभें

एक ओर पलिहर जोतात बा  
लागल असाढ़े से बरसे बदरिया  
पानी में बोरलसि भोंपड़िया, अटरिया  
सड़कि न लउकलि, न लउकलि डगरिया  
कहियो न नीमने से जमकल बजरिया

बरखा बहारि सकुचात बा  
देखीं सभें,  
जाड़े के रितु मुस्कात बा  
एक ओर...

घरती के एइस ले पानी पियवलसि  
भीतर से एकर करेजा जुड़वलसि  
बचलि-खुचलि गरमो कुआरे मेंटवलसि  
मधुर-मधुर सीतलि बेयाशि बहववलसि

एक ओर केवड़ा लजात बा  
देखीं सभें,  
एक ओर गेना फुलात बा  
एक ओर...

गरमी बिलाइलि, सरद रितु आइलि  
मोटिया के बंडी आ कुरता सियाइल  
कमरा आ दोहरि के बढ़लि इजतिया  
गद्दा, रजाई, सिरहानी भराइल

एक ओर सनई छिलात बा  
देखीं सभें,  
एक ओर रूई धुनात बा  
एक ओर...

साठी आ साठा करंगा आ भँदई  
मङ्ग्रा, जनेरा सारवाँ आ सँवई  
कोदो आ टांगुनि ऊरिद आ बजड़ी  
तीले की तेले में गमकेला गँवई

एक ओर तिलठी गँजात बा  
देखीं सभें,  
एक ओर तोरी छिटात बा  
एक ओर...

नेनुआ तरौई आ बंडा, परोरा  
दही के चक्का आ घीव के चभोरा  
भादों भँइसिया दूधे के हिलकोरा  
कोराँ गदेला, सोने के कटोरा

अरुई के पात पियरात बा  
देखीं सभें,  
गोभी के पात चिकनात बा  
एक ओर...

चिउरा कुटावें आ दही जमावें  
घीवे में बजड़ी के रोटी पकावें  
गोहूँ, अगहनी, रहरि आ रहिला  
आलू-मटर के बहिगवा सजावें

हेन्ने से डोला फनात बा  
देखीं सभें,  
होन्ने से आवति बरात बा  
एक ओर...

दसमी-दियारी के होला तयारी  
रामजी के लीला, जनक फुलवारी  
धुधुका आ घाँटी, दिया आ ढकनी  
बरही आ बीया आ हेंगा, कुदारी

कजरी न कत्तों सुनात बा  
देखीं सभें,  
बिरहा आ आल्हा गवात बा  
एक ओर...

भूसा भुसउला में कब्बे ओराइल  
भिरंगी आ बजड़ा असाढ़े बोवाइल  
घाने आ कोदो के पुजवटि गँजाइल  
ताले में मसुरी आ लेतरी छिटाइल  
एक ओर बजड़ा ओरात बा  
देखीं सभें,  
एक ओर लेंड़ई गदात बा  
एक ओर...

रब्बी के खेते में भँदई बोवाला  
रहरि की खूँटी में पलिहर छोड़ाला  
जइसे-जइसे भँदई फुलाला, गदाला  
ओइसे-ओइसे पलिहर जोताला, कोड़ाला  
एक ओर बोवल कटात बा  
देखीं सभें,  
एक ओर काटल बोवात बा  
एक ओर...

भादों में भँदई बचवलसि परनवा  
सहुवा के लगले रहल अलहनवा  
कातिक के दिन चढ़ि आइल कपारे  
कइसे के बावग के जूटी समनवा  
कवनेडा बीया बिकात बा  
देखीं सभें,  
कवनेडा बीया किनात बा  
एक ओर...

एक रितु आवेला, एक रितु जाला  
 बरखा आ सरदी आ गरमी कहाला  
 सब दिन बराबर ह, सब दिन ह नीमन  
 दइव के दीहल न कब्बों ओराला  
 पच्छिम में जोन्ही लुकात बा  
 देखीं सभें,  
 पूरब सलामी दगात बा  
 एक ओर...

बरखा के कइसे सिकाइति तूँ करव  
 जाड़ा के कइसे बढ़ाई देखइव  
 गरमी में केतना ले मुँह लुकवइव  
 केके घटइव त केके बढ़इव  
 एक फूल जबले गुहात बा  
 देखीं सभें,  
 एक फूल तबले लोड़ात बा  
 एक ओर...

सभे जाना हिलि-मिलि के दँवरी कराई  
 पलिहर में हेड़ा-कुदारि पहुँचाई  
 सरदी आ गरमी ई कब्बे न जाई  
 एही में दुनिया में सरग बनाई  
 भूठे नूँ दुखड़ा रोवात बा  
 कहीं सभें,  
 भूठे नूँ सेखी हँकात बा ।  
 एक ओर...

एक ओर भँदई दवात बा  
 देखीं सभें,  
 एक ओर पलिहर जोतात बा !



## परल पाला तुषार के...

वाजल नगारा वरलि बिजुरिया  
चढ़लि बंदरिया असाढ़ के  
उमगलि नदिया बूड़ल किनरवा  
चलल भँकोरा बेयारि के  
वाढ़ी में जिनिगी गाढ़े में परि गइल  
तोहार के आ हमार के  
पावस बीतल हेमन्त आइल  
परल पाला तुषार के

जोतल कोइल सींचल पटवल  
ऊठलि डिभिया सम्हारि के  
माटी में जिनिगी जग मग जग मग  
बढ़लि फसलिया सुतार के  
दूधा के दलिया चलली खेलावत  
सोना के दियना वारि के  
पाँतर में घेरलसि अइसन अन्हरिया  
परल पाला तुषार के

सारो पियरकी पहिरे घुमा के  
अँखिया में कजरा सँवारि के  
खेते के बहुवारि भूलें हिड़ोला  
डोरी किरिनिया के डारि के  
दइवा बेदरदी कइले का तें  
बान्हलि टटिया उजारि के  
सोना के जिनिगी माँटी में मिलि गइल  
परल पाला तुषार के !

सरसों रहिला, मटर, रहरिया  
गरवा में गरवा डारि के  
काने के वाली, नाकी के नथिया  
माँथे के बिदिया उतारि के

गोहूँवा के डँठवा करे विलपवा  
पतवा के अँचरा पसारि के  
तड़पे जिनिगिया फूटल करमवा  
परल पाला तुषार के !

भोरी कोइलिया काँहें तें बोले  
का पड़बे रो रो के पुकारि के  
एही दुनियवाँ में ई हो बा लागल  
एही में जिनिगी गुजारि दे  
जेकर ई सोना ओकर ई माटी  
गीतिया सुनादे तें बिचारि के  
जवनेडा मोतिया बरिसल ओहीडा  
परल पाला तुषार के !

समय के परले बड़ बड़ हरलें  
हुसियार के ह, गंवार के  
सरदी, गरमी, पाला, पाथर  
नीमन, बाउर बिसारि दे  
लागल बा तरवा, गूहल बा हरवा  
पतभर के आ बहार के  
एही नियम से दमकत सेनुरवा पर—  
परल पाला तुषार के !

जबले लउके साजल सिगरवा  
देखिले बउरहा तें निहारि के  
का जानी कहिया मुनबे अँखिया  
अब्बों पलकिया उधारि दे  
समय के आन्ही पानी ओला  
गड़ल भण्डा उखारि के  
तोके चेतावे सम्हर नाही त—  
परल पाला तुषार के !



## सहलो ना जाई...

एगो ढेला लागेला त फूटेला कपार  
बहेला रोकाला नाहीं रकते के धार,  
नरम नरम देहि केतना हँउवें सुकुआर  
कवने तरे सहेंलें ई पथरे के मार !

गोंहुवा, रहरिया की फुलवा की ऊपराँ—  
पथरवा के मार  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

खोंसि लिहली फुफुती, लगा के चलें टिकुली,  
गरवा में भलके किरिनिया के हँसुली  
डारि के अँचरवा होरिलवा पियावेली त  
होठवा की भीतराँ से दमकेला दँतुली  
ओहू पर बहिजाले जुलुमी बेयारि  
जेकराँ ढोंड़ी लागल नार  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

तिसिया के रंग सरिसइया के सारी  
फुलवा केरइया के छुँछिया पियारी  
रहिला रहरिया के बिदिया लिलरवाँ दे  
गोंहुवा गदेलवा खेलावे महतारी  
लाल लाल आँखि कढ़ले गुंडा सरदार  
अइलें लिहले कटार  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

कांपेला करेजवा लउकते बदरिया  
जिउवा हृदसि जाला देखते बिजुरिया,  
करेली मनौती पसारि के अँचरवा जो  
बहे लागे कसि-कसि पछिमी बेयरिया

ओह पर कइसे तूँ चलावेल कुठार  
जेकरा तोहरे अघार  
हमसे सहलो न जाइ हो  
पथरवा के मार

अटकलि जेकरा पर सबके नजरिया  
जेकरा से मँहके डगरिया, नगरिया  
सँसिया से जेकरी ई सँसिया चलत बाटे  
बुढ़िया जिनिगिया, पुरनकी दुअरिया

पथरे के गोलवा चलावें धुँआधार  
दिहलें खोंतवा उजारि  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

रोवेले चिरइया उजरि गइलें खोंतवा  
खेतवा में तड़पे फसिलिया के डँठवा  
सुखि-पाकि गइले टुकड़वा करेजवा के  
लागेला मसान अस सुनसान खेतवा

अब कइसे ढोई लोग जिनिगी के भार  
बहे रकते के धार  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

धइके कर्हियाँव अब चललें किसनवाँ  
मुँहें नाहीं लागी हाय अनवाँ के दनवाँ  
खेतवा की डड़वा पे जाके होलें ठाढ़ जब  
अँइठेला देहियाँ की भीतराँ परनवाँ



अँखिया की आगे उनकी छवलसि अन्हार  
गीरें खाइके पछाड़  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार

ईहे बा जो करेके त काँहे जनमावेल  
काँहें अँखुवाते एके अँगुरी धरावेल  
जरति जिनिगिया के रस-रतें सीचि-सीचि  
काहे के तू मटिया में रूप सिरजावेल  
काहे के लगावेल ई सोने के बजार  
जो बा लूटे के बिचार  
हमसे सहलो ना जाइ हो  
पथरवा के मार



## कटिया के सुतार...

कटिया के आइल सुतार, हो सजनी  
कटिया के आइल सुतार !

गाँठे खड़निया, माँथे पगरिया  
हाथे हँसुआवा, काँखे लउरिया  
ले लिहलें बलमा हमार, हो सजनी  
कटिया के आइल सुतार !

उखिया के रसवा, जोन्हुरिया के लउवा  
जियलनि मघवटे बिटिउवा बेटउवा  
फागुन की चढ़ते गदाइल, मोटाइल  
चितरा के गोहूँ, सेवाती के जउवा  
बिटिया न रहिहें कुँआर, हो सजनी  
कटिया के आइल सुतार !

कोरवाँ के बचवा के हाली पियाद  
वड़का लइकवा के बसिया खियाद  
गइया - वछरुआ के नादे लगाद  
बैला की नादे में सानी चलाद  
कब के भइल भिनुसार, हो सजनी  
कटिया के आइल सुतार !

मोटे मोटे लिटिया पर नून मरिचाई  
जेवें के बेरी न होले ओभाई  
बनि घरे आई, कुटाई - पिटाई  
गोंहुआ पिसाई त गीतिया गवाई  
भइलें मगन बनिहार, हो सजनी  
कटिया के आइल सुतार !

चितरा - सेवातो में सेवता घुमवलीं  
 अगहन में मरि-मरि पानी चलवलीं  
 ताले के लेंडई आ नेतीं के छींटा  
 गोहवा, वछहवा, लइकवा जियवलीं  
 अब लागी मुंहे अहार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

खुरपा से सब खरिहान छिलवावें  
 भारि भारि गोवर से खूब लिपवावें  
 एक ओर सरसों के बोझा सजावें  
 एक ओर रब्बी के गाड़ी लगावें  
 हलुआ न पूछी बिलारि, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

करपा अँवासीं के बोझा बन्हाई  
 एक एक अठइसा पर बनि निबराई  
 सोरहो सजाई आ पएर दँवाई  
 मूड़ी पर रहरि के चकवड़ि ढोवाई  
 मोटरी ढोवाई बजार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

गोहवा आ जउवा के बलिया विनाई  
 पौंढा में घ घ सिकहुता भराई  
 एक सुका सेर सढ़मेढ़े विकारि  
 माइयो हमार असों मेला में आई  
 टिकुली किनाई चटकार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

बरखा न बरिसल, अगहनी भुराइल  
 पलिहर न निमने जोताइल-कोड़ाइल  
 कवनोडा पानी पट के बोवाइल  
 सगरी गड़हियन के पानी ओराइल  
 गइले पताले इनार, हो सजनी  
 कटिया के लागल सुतार !

पुसवा आ मधवा विपतिया के खनियाँ  
 एही में होले वसूली लगनियाँ  
 साहव के कुड़को, सभापति के घुड़को  
 देवुआ की खातिर उजारें पलनियाँ  
 हाकिम, दइव हतियार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

असों की सालि हवे रब्बी के पारो  
 खेतवा बुभालेंसन सोने के थारो  
 रहरि के छीमो आ फगुआ के गारी  
 सम्मत जरावे के बान्हें लुकारो  
 चमकेला सबके लिलार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

नउमी के पूरी आ फगुआ के पूआ  
 बड़ा सोन्ह लागे कराहो के धूँआ  
 घरही के घोव तेल, घरही के भेली  
 छोनल बा जाँत बइठावत बा जूआ  
 खटिया पर परी पथार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

आमे की मोजरि में लागे टिकोरा  
 लइका नियर लरिकोरी की कोंरा  
 लकड़ी में साढ़ी, सितुहियन किकोरा  
 भरी बखारि, डिमिला जाई बोरा  
 के चाटी निवुआ अनार हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

खेत-खेत घूमेला तेली-तमोली  
 नउवा आ धोविया के निकलल बा टोली  
 पवनी-पवरिया चलेलें अगरा के  
 मुन ताड़ लोहरा आ कोंहरा के बोली  
 भइलें गँवार सरदार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

घेरिलस बदरिया लागल गरहनवा  
 अँखिया में गड़ेला बिगड़ल जमनवा  
 खेते से अनजा घरे चली आइत  
 भगिया के छोट वड़ हउवें किसनवाँ  
 परे न वज्जर के मार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

हाली-हाली हँमुवा चलाउ रे बलमुग्रा  
 कवनोडा जिनिगो के लागे अलमुग्रा  
 पच्छिम से बदरा उठल मँडराइल  
 चमके बिजुरिया त काँपे परनवाँ  
 नद्या फँसल मझवार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

तबले त बदरा गिरवलसि वजरवा  
 खेते में भरि ठेहुन परल पथरवा  
 गोंयड़, मझारि अउर पालो बिलाइल  
 रोंवे किसान ध के हाथें कपरवा  
 छवलसि अगासे अन्हार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

खेतवा में दनवाँ, अँखिया में वुनवाँ  
 रोवेला गउवाँ, गिररउवा, किसनवाँ  
 घरवा में डेहरी, दलनियाँ, वखरिया  
 दुसरा उदास, सून लागे खरिहनवाँ  
 बउक भइलि सरकार, हो सजनी  
 कटिया के आइल सुतार !

जेकरी करमवाँ में लिखलि किसानी  
 अँखिया की ओकरी भुराइल न पानी  
 सूखा अकाल वाढ़ पाला आ पाथर  
 के एइसन बा जे मेटाई हैरानी  
 करें गरोबवा गोहार, हो सजनी  
 कटिया के बिगड़ल सुतार !



## आव-आव बैला...

आव - आव बैला घुमाई दँवरी  
अव मिटि जाई बिपति सगरो

जव भिनुसारे खाँ बोले चिरइया  
देहिया के तूरति उठलि पुरवइया  
लट छितिरा के बहारे अँगनवाँ  
निविया की फुलवा से गमके मड़इया  
इनरा पर छलके भरलि गगरी  
आव-आव बैला घुमाई दँवरी

पचखा ले आव भाई, अखइनि ले आव  
हत्था खचौली आ दँवरी ले आव  
बेलन के नाध, बोलाव हरहवा  
खरहर से भार, उकाँव गोलियाव  
कबले सियाई फाटलि लुगरी  
आव-आव बैला घुमाई दँवरी

अपने न खइली जाँ, तोके खियवलीं  
सतुआ आ नून घोरि-घोरि के पियवलीं  
दालि-तरकारी के हालि नाहीं जनलीं  
तोरा के तोसी के खरी मँगवलीं  
खुरवा पर तोरी परलि पगरी  
आव-आव बैला घुमाई दँवरी

घवरा जे बैला बड़ा हउवे पाजो  
गइयो से बाजो, वछहवो से बाजो  
देख देख बोरे ला पैरे में नँकिया  
अइब हो काका, एकर मुँहवा जावीं  
लबदा गिराव, मँगाव रसरी  
आव-आव बैला घुमाई दँवरी

बहे लागल पछुआ, भुराये लागल डँठवा  
 एक पैर भइल बा एगो बरकठवा  
 एकहन गोंहुवा के गड़ी बा लागल  
 रोटिया के रसगर बना देई मठवा  
 घइली के पानी जुड़ाई ठठरी  
 आव-आव बैला घुमाई दँवरी

एक पहर पुरुआ, एक पहर पछुआ  
 एक जून रोटी-दालि, एक जून सतुआ  
 पयरे के ओढ़ना, बा पयरे बिछौना  
 घवदि टिकोरा के भोंपे-भोंप महुआ  
 पोछिया के चँवर डोलावे धवरी  
 आव-आव बैला घुमाई दँवरी

बड़हर के फूल अउर पकड़ी के ठूसा  
 सिरफल आ लेंढ़ा, तरबूजा-खरबूजा  
 सिरका आ पट्टी, मदारी आ नेटुआ  
 कुल्ही ह दँवरी की दम के जलूसा  
 पीपरा के पतवा बजावे थपरी  
 आव-आव बैला घुमाई दँवरी

होई ओसावन त रसिया ढोआई  
 रसिया की ऊपर बढ़ावन धराई  
 भूसा भुसउला, बखारीं अनजवा,  
 बोरन में तीसी आ तोरी धराई  
 सबकी ओरन्ते दँवाई लेंडुरी  
 आव-आव बैला घुमाई दँवरी

एही से सहुआ के करजा दियाई  
 चढ़ते असाढ़ असों खपड़ा फेराई  
 भरबि लगान, पेट खरचा चलाइबि  
 नन्हका के मोटिया के कुरता सियाई  
 लुग्गा की खातिर कोंहाई मेहरी  
 आव-आव बैला घुमाई दँवरी

कुछू जो होई न रह्रि विकारि  
चिरकुट ले भूली न गमछा किनाई  
एने के कसरि हम ओने निकालबि  
माघे ले वेंचबि जो भाव चढ़ि जाई  
मघवा किसनवन के नाही विसरी  
आव-आव बैला घुमाई दंवरी

पयरे में सोकना बढ़ावे न पावे  
फगुआ के माई गोवरहा उठावे  
पेटे की गरमो से पचल ना सीभल-  
अनजा के कूटि-पोसि रोटो पकावे  
हइजा बोला के सुतावे कगरी  
आव-आव बैला घुमाई दंवरी





## लामे जाये के परो...

अपनी ढोवही भरि के बान्ही जो गठरिया  
सँवरिया. लामे जाये के परो

अपनी चादर के मोताविक जे ना पाँव पसारो  
एइसन भकुहा के होई जे बनल काम बिगारी  
क के लमहर टटमजाल  
बनल चाही के कंगाल  
लिहले लइका, फइका, सँगवा मेहरिया  
सँवरिया लामे जाये के परो  
अपनी ढोवही भरि के...

वपहस जवन बिगहा पवलीं ओमें केतना होई  
रउरे जनमल नाँव प रउरी फेंकरि फेंकरि के रोई  
वाकी बढी ना जमीन  
होई ऊ कउड़ी के तीन  
जहिया बाँटे खातिर जूभी पट्टीदरिया  
सँवरिया लामे जाये के परो  
अपनी ढोवही भरि के...

जेतना सकती होखे रउराँ ओतने भार उठाई  
जब ना गुजर करा पाई त मति लमेर जनमाई  
लुग्गा-कपड़ा, कलम-किताब  
जब ना बइठी ई हिसाब  
कइसे चलबि लेके एतना फिकिरिया  
सँवरिया लामे जाये के परो  
अपनी ढोवही भरि के...

पढ़िहैं लिखिहैं ना त करिहैं चोरी अउर चिकारी  
इनकी खातिर बढ़ि जाई सासन के जिम्मेदारो  
आजिज सरकारो विभाग  
चलत नइखे अब दिमाग  
सदावरत बाँटो केतना नोकरिया  
सँवरिया लामे जाये के परो  
अपनी ढोवही भरि के...

छोटे-छोटे घर-आँगन हो छोटे परिवारो  
दावा बोरो से गर बाँचो होखो ना बेमारी  
खाये-पीये के सब माल—  
मीलो, रहे सब खुसहाल  
दोया जरति रहो भरले बखरिया  
सँवरिया लामे जाये के परो  
अपनी ढोवही भरि के...



## निभरि गइलें अमवा...

निभरि गइलें अमवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

ताके पतइया, डँहके टहनिया  
कुटुके कोयलिया त निकसे परनवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

सोने के मोजरि, रूपे के टिकोरा  
आन्ही के जोगवल, दइव के निहोरा,  
एक दिन ऊ आइल ई सगरी विलाइल  
फूटि गइल एइसन कि फूटे करमवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ,

डाढ़ी में भूलत रहल लटकेना—  
सेन्हुरिया, नौरंगिया, पियरका, फुलेना,  
बेसरि आ भुलनी भुमकवा आ हरवा  
एक दिन ऊ आइल छोराइल गहनवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

कोमल बदन जब लागल गदाये  
सिलवटि पर नूने की सँगे पिसाये,  
काँचे उमरिया के वैरो बेयरिया  
बहुतन के असमय छोड़वलसि जहनवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

दइब की फिरले दुनियवो सतावे  
 ढेला आ भटहा ऊ लागलि चलावे  
 छोड़लसि बिचरवा, डरलसि अंचरवा  
 सासत में परि गइल अमवाँ के जनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

कुछ दिन की बीतले जे गिरले से बांचल  
 रूपे में, रंग में, सवादे में मातल  
 एइसन ऊ पकलें आ एइसन ऊ चूवलें  
 कि मेला लगवलें, लगवलें नहनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

तनिको इसारा बेयारी के पावें  
 धरती के हँसि-हँसि करेजवा जुड़ावे  
 गदवा पियावें आ तगड़ा बनावें  
 मंहके दुअरिया, कोठरिया, अँगनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

रुखी आ सुग्गा, कोइल आ कउवा  
 वगिया में जुटलें बिटिउवा-बेटउवा  
 नाँचे आ गावें आ थपरी वजावें  
 केतने परानिन के लागल ठेकनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

एक आम चूवे पचास जने धावें  
 भगिया के चोखगर जे रहे ऊ पावे  
 छाती फुलावें आ जीभि चटकावें  
 एइसन बुभाय जइसे मीनल खजनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

माँझ दुपहरिया में ग्राम भोहरावें  
 भेवें परीते में, बखरा लगावें  
 हितई में भेंजे आ बैना पठावें  
 कनियो नूँ चापें जिनि अइली गवनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

पहली लवनिया में पाकल रोहनियाँ  
 पछुआ आ लूहे के मेटलि तपनियाँ  
 वारी में डेरा आ लइकन के फेरा  
 विछि गइलो, खटिया गड़ाइल मचनियाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

लूहे की भोंका में अइसन भोंकालें,  
 चिगुरेला हाथ गोड़, पीयर हो जालें  
 एवलें न पानी न जनले जेवानी  
 चुकटी कहइलें, गँववलें जनमवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

जहिया पिटइलें कहइलें फटलासी  
 लागि गइल दागी, हो गइलें कोइलासी  
 खोलि देलें पतरा, बनि जालें बभनवाँ  
 लगलें उचारे सगुनवाँ, लगनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

काँचे कचावट, पकले अमावट  
 ताजा तरावट, एइसन जमावट  
 डारेला पालि, केहू भूसा में गोरे  
 चटकल बजार भाव, छटकेला दमवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

बीनि-बीनि कोइली, जोग के धराले  
 गोहूँ ना मिले त रोटो वेलाले  
 जियते जुड़वलें आ अमरित पियवलें  
 मुयलो पर राखें धरमवाँ-करमवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

ओखरि धोवाइल त बोकला छिलाइल  
 मूसर की चोटे से गदवा छटाइल  
 आमे के भोरा, गादे के कटोरा  
 एही में आ गइलें बिछुड़ल सजनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

भेंटिया निखोरें आ चोपवा के भारें  
 हाथे से दावें आ मुँहे में गारें  
 चाटें अँठिलिया बोकलवो न छोड़ें  
 फेंके की बेरिया पछाड़ खाय मनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

लंगड़ा, सफेदा, सिपियवा, कपुरिया  
 गोलका, लोढ़ियवा, चउरिया, सेन्हुरिया,  
 हाय कटहरिया, अगोरवा, बेलमवा  
 आइलि अँठिलियो त ना तोरे कमवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

लइका जवान बूढ़ सबके बभवल  
 बड़का आ छोटका तूँ सबके लोभवल  
 ना कवनो भेदभाव, ना कवनो धोखा  
 सबके चपावेल एक समनवाँ  
 आइ हो रामा,  
 निभरि गइलें अमवाँ

जामलि आँठिलिया, लइकवा सुनि धावें  
कोई रगरि के पिपिहरी बनावें,  
जवने लइकवन की खातिर ऊ जियलें  
अब कइसे छोड़िहें ऊ लइकवन के तँगवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

बारी में लइके भुलाके ना जालें  
राही बटोही जे आवें, छँहालें  
का रउराँ पवलीं, काहें के उपजलीं  
काहें के लागल वा ई कुलि करनवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

दँतुअन जो तूरे त रउराँ न बोलीं  
डढ़ियो जो काटे त मुँहवों ना खोलीं  
रउरी पतइया से होखे सइतिया  
के रउराँ हँई बताई मरमवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ

दुनियाँ बउरही के हमका बताई  
डढ़ियन पतइयन के का समुभाई  
मन एइसन करुवे हम रउरे के पूजतीं  
घोइ-घोइ के पी लेतीं राउर चरनवाँ  
आइ हो रामा,  
निभरि गइलें अमवाँ



## सामा पर कवि...

केतना देसवा हमार ई जुझार भइल बा  
जेतना जनता चढ़े ओतना सरकार चढ़ति बा  
केतना देसवा हमार ई...

कलम सुकुवारि तरवारि ह हराठी  
दूनू में बा नोंक भले होखो दू गो काठी  
दूनू के ह जाति एके दूनू के माटी  
दूनू मिलि के मारि में चलावेलेसनि लाठी  
जेतने कलमि चले ओतने तरवारि चलत बा  
केतना देसवा हमार ई...

गौतम भइलें, गान्ही भइलें, एक से एक गेयानी  
दुनिया के वचावे खातिर बोलें अमरित बानी  
नेहरूजी की पंचसील के जो ना दुनिया मानी  
लागी एइसन आगि जरे लागी ई दीवानी  
देखी बढ़त बा अँजोर आ अन्हार छँटत बा  
केतना देसवा हमार ई...

पीठि में छूरा भोंकला के ई कवन मरदानी  
ताल ठोंकि के आउ तब तोके वखानी  
एइसन एइसन दाव देखाई, दीं एइसन पटकानीं  
गरम खून के नसा उतारीं, देईं ठण्डा पानी  
चाऊ चीरि-फारि खा जाऊ, ई ललकार मचल बा  
केतना देसवा हमार ई...



अपनी घर के ईजति जे सीवाने पर नचावे  
 एइसन वा ई दुनिया ओ भँडुवन के मरद बतावे  
 जोते खातिर चीन बहू-बेटिन से कसब करावे  
 भोष्म पितामह इहाँ सिखण्डिन पर ना तोर चलावे  
 चीनी तोहके ह धिरकार, ई पुकार मचल वा  
 केतना देसवा हमार ई...

जनम के टुकड़ा-खोर चीन तें का हमसे बतियावे  
 जेके गारी दे ओकरी दुधारी पोछि डोलावे  
 अस्ट्रेलिया जियावेला त अमरीका लतियावे  
 कइसन वाड़ें अधम रूस से भी ना पटरी खावे  
 तोरी धरवे में देखु तकरार मचल वा  
 केतना देसवा हमार ई...

ह्वेनसांग, फहियान, इत्सिंग, तोर दादा लकड़ दादा  
 कहाँ कहाँ ना भूकल ए धरती पर उनकर माथा  
 कुल कलंक ते भइले अपनी घर में एइसन व्याधा  
 ओ धरती पर ताकत बाड़े लेके नीच इरादा  
 तोहरी हाड़-चाम के, बोटी के पहाड़ बनत बा  
 केतना देसवा हमार ई...

राष्ट्रसंघ में नेहरू जी के चलत देखि के सेंगा  
 सफल देखि के प्रजातंत्र के घूमे लागल भेंजा  
 पंचसील योजना अन्त में फरलसि तोर करेजा  
 कवनो असर ना हमनी पर खूब भाँजि ले तेगा  
 जेतने हर चले ओतने हथियार बनत बा  
 केतना देसवा हमार ई...

मुख, वाँचु इतिहास इहाँ के पढ़ पुरान आ पोथी  
 गिरल लोथि पर लोथि युनानी तेग परि गइल भोथी  
 हूण और सक सबके मूँड़ी भरि भरि भाला गोथी  
 का ते फुटहा ढोल बजावे बाति बनावे थोथी  
 माऊ करे के दवाई तोर दुकान खुलत बा  
 केतना देसवा हमार ई...

पानीदार सेल्युकस रहे खुलि के भइल लड़ाई  
 बल के थाह लागि गइल जब कइलस वीर, बड़ाई  
 देस छोड़ि दिहलसि बेटी कइलसि तुरत सगाई  
 ते लड़ले की पहिले कइले बेटिन की विदाई  
 तोके खिचड़ी की वाद से मोकाम दिहल वा  
 केतना देसवा हमार ई...

चूसुल में तें पिये के रहले चाय, बदा ना भइल  
 चिउटा माटा अस तोहनिन के लासि विछावल गइल  
 गरम खून ओही प्याला में रण-चण्डी के गइल  
 तोरी पूजा आ सतकार के विधान रचल वा  
 केतना देसवा हमार ई...

इहे बाति कहिके तोहसे अब चीनी, लौटत बानी  
 कोलम्बो प्रस्ताव के बस मीयादि अगोरत बानी  
 रच्छा कोष बढ़ावत बानी होता खूब किसानी  
 तोहरी खातिर ध दिहले बानी जा सोना चानी  
 तोहसे जूझे के हिमालयो तइयार भइल वा  
 केतना देसवा हमार ई...



बोलावत बाना जा...

चढ़ि के आउ रे दुसमनवाँ अब बोलावत बानी जाँ  
आपन देंहि अउर गदराले  
खाले, पीले, खूब मोटाले  
तो के हते के हथियार अब पिजावत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...

मानवता के नाता मनलीं, मनलीं तोके भाई  
प्रेम मोह में बूड़ल रहलीं, दिहलसि ना देखाई  
ऊपर तूँ नीमन बतियावे भीतर लागल काई  
जेकरी स्वागत में रहली जाँ, ऊ निकलल कसाई  
कसि के कमर होखु तइयार  
कइ ले पीठि खूब बरियार  
अब हमनियो का धोती खूँटिआवत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...

भारत-वासी हमनी का ना जानी होसियारी  
का जानी का धोखाधड़ी, का जानी गदारी  
सूतल बाघ जगा के हाँकी, एइसन त सिकारी  
अबहिन ले जनलीं जा नाही चोरी अउर चिकारी  
तें त जनम के भूठ लबार  
कइले घोखा दे के वार  
अब तें हो जो सावधान, ई चेतावत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...

जब से बरम्हा रचना कइलें मानुस देंहि बनवलें  
 सत्य, अहिंसा, प्रेम भावना, हिरदय में उपजवलें  
 बुद्धदेव आ गान्धी बाबा इहे पंथ अपनवलें  
 रिपियो, मुनियो, ओम सान्ति के पाठ वेद में गवलें  
 एकर अरथ न बुझिहैं आन  
 रामायन गीता के ज्ञान  
 हमनी का एह रंग में सदई से चलि आवत बानी जाँ  
 चढ़ि के आउ रे...

तें जनले वानर घुड़की से भारतवर्ष डेराई  
 आगे-पीछे भइला से तें जनले घोखा खाई  
 घर फोरे के कोसिस कइले, बनले कुटनी दाई  
 पंचाइति के बाति न मनले, एतना ले बरियाई  
 दुनिया देखे आँखि पसार  
 गुण्डा-गरदी के बेहवार  
 तोहार छक्का-पंजा कुल्ही अब छोड़ावत बानी जाँ  
 चढ़ि के आउ रे...

भाषन-लेकचर बहुत दियाइल, बहुत गवाइलि कविता  
 पूजा-पाठ, जगि से गइलन बहुत मनावल देवता  
 बालू जोतल गइल, सान्ति के बहुत दियाइल सेवता  
 खुलि के आउ देत हम बानी तोहें युद्ध के नेवता  
 धेनुहा वाले राजा राम  
 चक्र सुदर्शन वाले स्याम  
 अर्जुन, अंगद, भीम, हनुमान, सब गोलियावत बानी जाँ  
 चढ़ि के आउ रे...

हर मोरचा पर, हर चौकी पर, फउज खड़ी तइयार बा  
 घेरिह-घेरिह, मरिह-कटिह, मचल इहे ललकार बा  
 हथियारन से करखाना भरि गइल अन्न भण्डार बा  
 बैरी के मूँड़ो न काटीं त हमरी जियले के धिरकार बा

छोड़ि के कजरी अउर मल्हार  
छोड़ि के सगरी सबख सिंगार  
बाजा मारू, ढोल जुभारू, अब बजावत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...

ई मत जनिहे भारत के जनता बाटे पटाइल  
तोरी खातिर एके हर में बाटे सब नधाइल  
सब बाटे गरमाइल बाटे सब केहू बउराइल  
चीरि-फारि के सब चाहत बा दुस्मन के खा जाइल  
सुनि ल चीन के तानासाह  
इहाँ करोड़न भामा साह  
तोहरी स्वागत के सामान सब जुटावत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...

भारतीय जवान भइया, आव हिरदय लगाईं  
विजय तिलक माथे पर दे, आरती करीं, बलि जाईं  
जेकर माता संकट में ऊ बेटा का कहाई  
दुसमन ठाढ़ दुआरी पर त कइसे कवर घोंटाई  
सुनि के दुसमन के ललकार  
चुप रहला के ह धिरकार  
आगे चल, पीछे-पीछे सभे आवत बानी जाँ  
चढ़ि के आउ रे...



## आखिरी कदम...

एगो अउरी कदम—

आखिरी कदम !

मंजिल अब तनिको दूर न बा

केहू एतना मजबूर न बा

हे गुइया, आजु उठाउ कदम

एगो अउरी कदम—

आखिरी कदम !

दिल से गहारी दूर भइल

जंजीरवो चकनाचूर भइल

बा लोक तंत्र के दिया जरत

माटी आपनि सिन्दूर भइल

हइ हे नू आजादी के सिंहासन—

चमकेला चम-चम-चम

एगो अउरी कदम—

आखिरी कदम !

जवनी ताकत से भिड़ली जाँ

जवनी ताकत से अड़ली जाँ

ओही ताकत से मंजिल पर—

तनिके भर में अब पहुँचबि हम

एगो अउरी कदम—

आखिरी कदम !

एगो नयी रोसनी आजु जरलि  
नस नस में आगि नयी सुलगलि  
हम कोटि-कोटि भारत-वासी  
सबकी आसा के कली खिललि

बस एही जोति से अब स्वदेस में-  
जग मग दिया जराइवि जाँ,  
जिनगी के बगिया महँकि उठी-  
अब एइसन फूल उगाइवि जाँ

हम एक खून  
हम एक जान  
हिन्दू होई भा मुसलमान  
दुनिया में केसे बानी कम  
एगो अउरी कदम-  
आखिरी कदम !

जेलखाना में ठूँसल गइलीं  
बान्हल गइलीं, पीटल गइलीं  
गोरलि ना पगरी बापू के  
माई के दूध न लजबवलीं  
हमरी सबकी कुरबानी से  
धरती पर जामी फूल नया  
बस एही सान पर हँसि हँसि के  
डामल गइलीं, सूली चढ़लीं

हमनीं का बढते गइली जाँ  
दुस्मनबो फेंकलसि बम पर बम  
एगो अउरी कदम-  
आखिरी कदम !

भारत माता की गोदी में  
सगरी दुनिया आवत गइली  
अपनी बचवन जइसन मइया  
उनहू के जुड़वावत गइली

ऊ माता दुनिया के माता  
दिन काटति बा हैरानी के  
चक्कर में परलि बा माई—  
सैतानन की सैतानी के  
एक्के अउरी भटका दिइले  
आखिरियो बन्धन टूटी अब  
एक्के ठोकर से हे भइया,  
पापे के घइली फूटी अब

दुनिया में अमन चैन फइले  
घर-घर में सुख क दिया जरे  
ऊ दिन फिन से ले आइवि जाँ  
मंजिल पर बढ़ते जाइवि जाँ  
जब तक हमनी की दम में दम  
एगो अउरी कदम—  
आखिरी कदम !





## हमरा अधार बा...

नाँवे ले हमरा अधार बा  
सुनीं सभें,  
नाँवे ले हमरा अधार बा

कवने मंजिल पर बसलि नगरिया  
ले जाले ओइजाले कवन डगरिया  
एकर न अँचिको विचार बा  
सुनीं सभें,  
नाँवे ले हमरा अधार बा

केकरी करेजा में पइठल न चोर बा  
का जानी केने लुकाइल अँजोर बा  
सबकी दुआरी अन्हार बा  
सुनीं सभें,  
नाँवे ले हमरा अधार बा

दुनिया की लोगन से पूछल अनेर बा  
कुछू ना बिगड़ल बा, अबहिन सबेर बा  
एके लेखाँ सब संसार बा  
सुनीं सभें,  
नाँवे ले हमरा अधार बा

जिनगी ओरा जाई, अहक न जाई  
गूरे के चिउँटा, ई कबले अघाई  
माया के लागलि बजार बा  
सुनीं सभें,  
नाँवे ले हमरा अधार बा

केकरी भरोसे ई जिनिगी बिताई  
 रोई कि गाई कि पागल हो जाई  
 सजी लोग मतलब के यार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा

जबले ई पवहख बा तबले चलाइबि  
 केहू की कहला में कब्बो ना आइबि  
 जानल बुझल बेहवार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा

केकर ई नाँव हउवे, ले एइसन नामी  
 के एइसन दुनिया में जनमल गियानी  
 केकर बेड़ा भइल पार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा

रस्ता आ घाटें जे केहू भेंटाई  
 हमरी दुआरी भुला के जे आई  
 ओकरा पर दुनिया निसार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा

जे केहू रोई, ऊ हमके रोवाई  
 देखी करेजा करेजा देखाई  
 एतने ले सवख-सिंगार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा

ओही की नाँवे के जपीले माला  
 ओकर सुरतिया ना बब्बो भुलाला  
 केहू ना दूसर हमार बा  
 सुनीं सभें,  
 नाँवे ले हमरा अधार बा



## मुक्तक

तूरि के फेंकि द चाहे मीस मल  
तोहरी खातिर करेजा डँहकते रही  
चाहे आन्ही बहो, चाहे बिजली गिरो  
फूल ह त बगइचा मँहकते रही

चाहे रोव भा गाव, ठठा के हँस  
जवन होखे के बा तवन होइवे करी  
जिन्दगी चढ़ि गइल बाटे जब दाँव पर  
चाहे अइवे करी, चाहे जइवे करी

हमके मजनू कह, फरहादो कह  
हमके हटे के बा कि डेराये के बा  
जबले जीये के बा मस्त रहे के बा  
हमके जरे के बा कि बुताये के बा

जवने खूँटा बछरवा बन्हा गइल बा  
हुमचवला से का फरियाये के बा  
तूरि के फेंकि दिहलसि त का हो गइल  
फेनु ओही में ओकरा बन्हाये के बा

केहू देखल करो, केहू सूनल करो  
केहू कवनोडा हमरा के जाँचल करो  
हमके धरे के होखे रँगल हाथ त  
हमरी कविता की पाँतिन में भ्रँकल करो

जाके कहि द दुआरी केहू ठाढ़ बा  
ऊ बहुत दूर से चलि के आइल हवे  
लौटि जइहें त जेवनार धइले रही  
कुछु खियादेँ, ऊ बहुते भुखाइल हवें

हमके एक्को घरी चैन नाहीं मिलल  
राति भर केहू दीया जरवले रहे  
अव न सूतो सकीं, आ न जागी सकीं  
हमके के दोनी कहवाँ बोलवले रहे

फूल का तोहके चाही बताव तनी  
ई वगइचा तोहरिये से गुलजार बा  
रूप में, रंग में, गन्ध में, रस में  
डूबि जाये के दुनिया ई तइयार बा

फूल सूघर फुलाइल जो देखीं कबों  
मन करेला हम तूरि के सूँघि लीं  
डार से तूरि के ओके देखीं ले जब  
मन करेला हम आँखि के फोरि दीं

कवनो गवने के आइल दुल्हनिया रहे  
जवन पियरी पहिरि के गोदावति रहे  
सुघराई गदा गइल बा केतना  
एगो अन्दाज आपन लगावति रहे

कब्बों आँखी में काजर लगावति रहे  
कब्बों माँगी में सेनुर दरावति रहे  
ध के पल्ला केवाड़ी की आड़े खड़ी  
ऊ इसारा से बालम बोलावति रहे

देखिके जवन सूरति न मन डोलिजा  
ओके सुन्नर जो कहीं त कहल करीं  
दर्द से जो करेजा न टीसत रहे  
दुख बना के जो सहीं त सहल करीं

जों न रोमांच होखे, न टीसे जिया  
आँखि भूठे लड़वला से का फायदा  
प्राण में बाँसुरी जे न फूंकल करे  
ओके आपन बनवला से का फायदा

जेकरा होखे ऊ हमके देखा दे  
जो ना होखे त साफे बता दे  
की त अपना के माटी-मेरा ले  
की त हमरा के कंचन बना दे

सुघरइये जो रहित अनेरिये रहित  
सुघराई में जो ना जवानी रहित  
सजी सुघराई सुखले भुराये लगित  
कवनो बाकी न एकर निसानी रहित

ई अमर घोंट तोहके पिया के कह—  
सुघराई, जवानी कहाँ खो गईलि  
जवने सपना के अयना देखावति रहे  
ओ के दू दिन पोल्हा के ऊ का हो गईलि

अपनी किस्मत में जवन लिखा अइल तू  
पछतइला से का कुछू बने के बा  
फेनू जइह त कागज सुधरवा लीह  
जवन पइव इहाँ ऊहे गने के बा

वारि के एगो दीया दियरखा धर  
दुख अन्हरिया के का एतना सहत बाड़  
माँह उजियार आइल-जाइल कर  
काँहे भूतन की संगे तू रहत बाड़



रउरा दीया जरावे के कहत हई  
रउरा कहीं त हम बिजुलियो बारि लीं  
जवन कुकरम अँजोरिया में हो रहल बा  
वस चले त एहू के ना टारि दीं

कइसे केहू के बुझाउ कि अँजोर भइल बा  
जब कि दिनवे में रतिया वसेड़ कइले बा  
तब काँहे न बेचैन सजी लोगवे रहे—  
जब कि अदिमी के अदिमी पछेड़ कइले बा

खून पियला से खून ना बने  
खून दिहला से खून बने ला  
साँसि लिहला से साँसि ना मीले—  
साँसि छोड़ला से साँसि मीले ला

एगो दीया जरा के तूँ बइठल बाड़  
तोहरा दीया-दियारी बुझाला इहे  
केतना दीया अन्हरिया में परल हई  
हमके अखरेला इहे, दुखाला इहे

चले नइखे देत जब एको डेग फेमिली  
कविता में का करी मेटाफर आ सिमिली  
जियला में कवनो सवाद जब नाहीं बा त  
का केहू आम जागो, का जानो इमिली

ऊखि भोरी ले हम, धान सोही ले हम  
काटि के कोन सेवता घुमाई ले हम  
कइसे राकेट उड़ी, कइसे ऐटम बनी  
भूखि लागे जो तोहके खिआई न हम

रउरा मालिक हईं रउरा राजा हईं  
 रउरी गोड़े के हमनी का जूता हईं  
 रउरा डारी ले कवरा त भूँकी ले हम  
 हम त रउरी दुआरी के कुत्ता हईं

जहँवे से टेढ़ होखे तहँवे से धरीं  
 पुलुई से चलीं, सरकि आईं जरीं  
 बेसोभ भइला जो होखे के नइखे त  
 जवने तरे हो सके तवेने तरे करीं

पानी बिना जरेला किसानी  
 बदरा से माँगी हम पानी  
 देखीं तनी कवि जी के,  
 केतना मदाइल बाँड़ें  
 बदरा से पूछताड़ें—  
 'काहाँ दिलवर-जानी ?'

केहू बदरा के देला अँकवारि  
केहू अँखिया में लेला एके डारि  
गइल एही में बदरवा ओराइ  
अव कइसे केहू भोंको गोनसारि

रूप के देखे ल लुभा जा ल  
वात करते करत धरा जा ल  
तू अपनी रूप के बिगाड़े ल  
आन की रूप पर विका जाल

उनके केहू कवन वाति बतियाई  
उनसे केहू कवन पद फरियाई  
उनका करे के बा आपन वाला  
हमसे ई होई ना लउरि-बरियाई

घरही में आँखि देखलावें पिया मोर  
खेते खरिहाने नाहीं चले कवनो जोर  
पत्तल चाटें, भरका सूँघें, हउवें किरतनिया  
दिन-दुपहर उनके खेत काटे चोर

ई कइसन ठाट बनवले बाड़, ए मोती  
कवन रोजगार उठवले बाड़, ए मोती  
बिद्ध करवा के सजी देंहि उहो हँसि-हँसि के—  
उनके अंगे जो लगवले बाड़, ए मोती

तेज रफतार से जात बाटे सभे  
धूरि गोड़े के जपला धोवाई उन्हें  
केहू केहू के चीन्हत ! ले नइखे इहाँ  
गोल सगरी एकट्ठे भेटाई उन्हें

तेल माटी के एइसन नूं हो गइल अब  
आगि गंगोजी में ई लगावत बाटे  
जवन पानी कि मुवले जियावत रहे  
उहे पानी जियतवे मुवावत बाटे

नाव हेन्ने ले आव हे घटवार तूं  
हमके जल्दी बा, ओ पार जाये के बा  
नाव जो ना ले अब त मँझधार में  
हमके वूड़े के बा, उतराये के बा

तोहके पँवरे के आवेला एही बदे  
नाव में छेद तोहके न करे देइबि  
बीच धारा में तूँह भेंटाइल बाड़  
नाव में तोहके पानी न भरे देइबि

ईहे नूँ करबू जे कुछु कहबि त कोहना जइबू  
आजु से हमरी लगे फेनु से तूँ ना अइबू  
हम तोहार प्यार जमाना के परसादी बाँटवि  
तूँ हमार प्यार जँहे रहबू उहेँ पा जइबू !

एगो तोहरी बदे हम दुख ई उठावत बानी  
माँह मझियार तोहार गीत ई गावत बानी  
कहाँ बा दर्द, कहाँ बा दुखात, का जनबू  
आँखि में बारि के दीया त देखावत बानी

जवन करे के रहे तवन त तूँ क दिहल  
कवन गति बाकी बा हमार अब बनावे के  
मुँह में कविता के करिखा तो पोतिये दिहल  
पंच के बीच काहेँ चाहे ल घुमावे के

एगो ऊ दिन रहे जब हींगु बनल रहलीं हम  
ई जमाना नूँ ह अब आँखि में गड़त बानी  
हमार पच्छ लेके भागि तब रहे लड़ति  
आजु हम ओही अपनी भागि से लड़त बानी

समय त चलवे करी तूँ चल भा मति चल  
समय की तेज चाल में तूँ खिचइये जइब  
नीक बा एही में गावत आ बजावत चल  
जो कहीं लोरि गिरइब त पिटइये जइब

काल से जूझे के तोहरा जो हौसला होखे  
सौख से जूझ हम असीस तोहके दे तानी  
जीति जइब त तोहरी नाँव के डंका बाजी  
जूझि जइब त उतरि जाई काल के पानी



ऊ कवन बाति ह जवने वदे जूझत बाड़  
जान लेइबि त तोहार साथ जरुरे देइबि  
बाति जीयत रहे, लड़ तूँ हीक भरि अपनी  
ए लड़ाई में आपन माथ जरुरे देइबि

समय के बान्हि के मुट्ठी में ऊहे बइठेला  
सत्य आ प्रेम के दीया जे जरबले रही  
समय के एक एक घात ऊहे बूझेला  
अनन्त तार से जे तार मिलवले रही

एगो दुसमन जनमते भेंटाइल  
सबकी देंही में आके लुकाइल  
छिप के गावे, बजावे नगारा  
नाँचे लागल जिया बउराइल

भोजपुरियन के हे भइया, का कहे ल  
खुलि के आव, अखाड़ा लड़ा दीहेसनि  
तोहरी चरका पढ़वला में का धइल बा  
तोहके सगरी पहाड़ा पढ़ा दीहेसनि

दालि-रोटी आ माठा जो मीलल करी  
जबले गमछा में भूजा आ भेली रही  
तेल सरसों के बुकवा जो लागल करी  
अपनी किस्मत पर भंखत चमेली रही



## भोजपुरी संसद के प्रकाशन

•

* तेगग्रलो और काशिका ( कविता )	३.००
* खैरा पीपर कवहूँ ना डोले ( कहानी संग्रह )	१.००
* रहनिदार बेटी ( सामाजिक उपन्यास )	१.५०
* विश्राम के विरहे ( विरह गीत )	१.५०
* भैरवी क साज ( प्रतिनिधि कहानी संग्रह )	३.५०
* नयकी पीढ़ी ( सामाजिक नाटक )	२.५०
* के कहल चुनरो रंगा ल ( ललित निबन्ध )	३.५०
* सेमर के फूल [ सजिलद ] ( कविता ) [ अजिलद ]	४.५० ३.५०

•

● भोजपुरी संसद ●

जगतगंज, वाराणसी-२

